अन्तरा-शब्दशक्ति

केक

(कथा संग्रह)

पूनम (कतरियार)

केक

(कथा संग्रह)

पूनम (कतरियार)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-79-6"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१९- पूनम (कतरियार)

मूल्य - ६०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

CAKE BY POONAM KATARIYAR

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	भूमिका	5
1.	नियति की विडंबना	7
2.	लौ	8
3.	गलत	9
4.	गणतंत्र की जलेबी	9
5.	चुनावी-सहयोग	10
6.	केक	11
7.	मंगलसूत्र	12
8.	आनंद	13
9.	वेलेंटाइन	13
10.	स्टेट्स	14
11.	कन्या-पूजन	15
12.	मातृत्व	16
13.	सूझबूझ	17
14.	दान-सामग्री	18
15.	प्रतिबंध	18
16.	धरना	19
17.	रैली	20
18.	डर	21
19.	रोशनी	22
20.	बेहूदा	23
21.	अमर-शहीद	25
22.	सरस्वती-पूजा	26
23.	सिगनल	28
24.	चुनौती	29
25.	बदला	30
26.	भूख	31

भूमिका

कथा-लेखन से मुझे सदैव अप्रतिम आत्मसंतुष्टि मिलती रही है, जिंदगी की भाग-दौड़ में न जाने कितनी कथाऐं, मन-मस्तिष्क में तैयार हुई, किंतु शब्दों में ढल न सकी, कुछ समय का अभाव और थोड़ा स्वयं का प्रमाद, यों कहें कि इच्छाशक्ति की कमी जो भी हो, बस लिख नहीं पाई, विगत एक-दो बरसों से फिर से लेखन में सक्रिय हूँ, तो कुछ साहित्यिक-मित्रों के प्रोत्साहन से अपने प्रथम कथा-संग्रह 'केक' आप पाठकों के समक्ष लेकर उपस्थित हूँ, इनमें से कुछ कहानियाँ आसपास घटित होने वाली घटनाओं पर फौरी प्रतिक्रिया के रूप में हैं, तो कुछ संवेदना के स्तर पर आहत नैतिक-मूल्यों को लेकर भी लिखी गई है, महानगर और गाँवो का सामाजिक जीवन हो या फिर, महिलाओं की बेचारगी और बच्चों की मासूमियत, सभी मुझे अपनी ओर खींचते रहे हैं, फलस्वरूप, ये सभी पाठकों से इस कथा-संग्रह में मिलते रहेंगे, ये छोटी-कहानियाँ कलात्मकता की कसौटी पर कितनी खरी उतरेगी, ये आप विद्वजनों पर छोड़ती हूँ, अस्तु, इतना आश्वस्त अवश्य करती हूँ कि ये छोटी कहानियाँ आपको रोमांचित भी करेंगी, झकझोरेंगीं भी और कुछ सोचने को विवश भी करेगी।

आशा है, कहानी-लेखन के इस प्रथम प्रयास को आप सहृदय-पाठक अपना आशीर्वाद अवश्य देंगे,

धन्यवाद!

पूनम (कतरियार)

नियति की विडंबना

अब इस 85-88 की उम्र में, इतनी दवाईयों के सहारे कोई कितनी भाग-दौड़ करें? परंतु कोई उपाय नहीं है, रुपये-पैसे की कोई कमी नहीं है, बच्चे विदेश में रहते हैं, बहुत सी चीजें आनलाईन भेजते रहते हैं, तकरीबन रोज़ फोन कर हाल-समाचार भी लेते रहते हैं, महरी समय पर खाना बना जाती है, रोज़ की साग-भाजी, दवाईयाँ-राशन आदि लाने के लिए भी एक आदमी है, फिर भी, कुछ काम ऐसे हैं, कि बिना किसी अपने के, इस वृद्ध दंपति को अकेले करना पड़ता है, मसलन, नियमित शारीरिक -जांच के लिए डाक्टर के पास जाना ए. टी. एम. का पासवर्ड याद नहीं रहता, तो बैंक जाना आदि, घंटी बजने पर दरवाजा खोलने उठना, रात में घर को अच्छे से बंद करना, दसियों ऐसे छोटे-छोटे काम है, जो अब मजबूरीवश करते हैं, इधर पत्नी के आर्थराइटिस का दर्द भी काफी बढ़ गया है, तैयार खाने को गर्म करना-परोसना, समय पर दवाइयाँ लेना, हर काम के लिए अलार्म लगाना आदि भी कठिन लगता है, याददाश्त की समस्या तो दोनों को ही है, कभी कपड़े भी गीले हो जाते हैं, जिंदगी से लाचार, किसी तरह एक-दूसरे को संभाल रहे हैं, आज अखबार में कुंभ- मेले का समाचार देख, एक विचार कौंधा, दोनों ने नजर भरकर एक-दूसरे को देखा और इशारों-इशारों में ही दृढ़ निश्चय कर लिया आखिर, कसकर हाथ पकड़े, संगम में डुबकी लगाते हुए तेज -बहाव में बह गए तट पर खड़े लोग नियति की विडंबना देखते रह गए।

लौ

तब मैं प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाऐं लिया करती थी, अस्वस्थ होने की वजह से, एक महीने के लिए मैंने एक तीस-पैंतीस वर्षीय अशिक्षित-महिला, 'श्यामा' को खाना बनाने रखा था। एक शाम वह जल्दी ही खाना बनाने आ गई, पूछने पर बड़ा सकुचाते हुए उसने बताया कि, वह तीज-त्योहार, शादी-ब्याह के अवसर पर स्वयं गीत-भजन आदि, जोड़-जोड़कर बनाती और गाती है तथा आज उसे मंदिर में भजन गाने जाना है, एक दिन उसने मुझे गाकर सुनाया भी, भाषा की अशुद्धता को नजरंदाज कर दें तो, उसके गीतों में अद्भुत भावाभिव्यंजना थी एवं आवाज तो सुरीली थी ही, मैने उसे प्रौढ़ शिक्षा में पढ़ने के लिए कहा तो वह लजा गई, का दीदी जी, इस उमिर में पढ़े जायें तो, लोग का कहियन अरे पढ़-लिखकर अपनी भाषा सुधार लो तो, तुम गीतों की किताब भी लिख सकती हो, मैंने मजाक में कह दिया, मेरे स्वस्थ होने तक उसका महीना भी पूरा हो गया। जब मैं उसे रूपयें देने लगी तो वह शरमाते हुए कहने लगी, दीदी जी, हमें पढ़ाओगी? दृढ़ संकल्प, तीक्ष्ण गाह्य-शक्ति तथा सबका प्रोत्साहन पाकर श्यामा की भाषा और लेखन में गजब का सुधार हो रहा था। मेरे प्रति कृतज्ञता उसके आँखों में झलकती थी, मुझे भी नारी-शिक्षा एवं प्रौढ़-शिक्षा को अमली-जामा पहनाना संतुष्टि दे रहा था, थोड़े दिनों के बाद मेरा तबादला हो गया, बात आई-गई हो गई, आज पुस्तक-मेले में घूमते हुए, लोकभाषा-साहित्य के स्टाल पर लगी एक पुस्तक के आवरण पर पहचानी-सी एक तस्वीर को देख कदम ठिठक गए, पहले पृष्ठ पर नजर पड़ते ही आँखें ख़ुशी से भर आईं, आदरणीया 'दीदी जी' को मेरा यह लोकगीत-संग्रह सादर समर्पित 'श्यामा-देवी'।

गलत

दादाजी गाँव के मुखिया थे. गाँव के मुखिया होने की वजह से रीमा के घर में भी धूमधाम से झंडोत्तोलन किया जाता है, अभी हाल ही में, विद्यालय में मैम ने संविधान का अध्याय पढ़ाना शुरू किया था, कुछ-कुछ बातें स्पष्ट भी हो रही थी। सफाईकर्मी 'जगिया' दो- दिन की कड़ी मेहनत कर पूरे अहाते को झंडोत्तोलन के लिए शानदार तरीके से तैयार कर दिया था। काम समाप्त होने पर दादाजी ने उसे कुछ अतिरिक्त रुपये ईनाम स्वरुप देने चाहे तो, उसने 'छब्बीस-जनवरी मेरा भी पर्व है, कहकर रूपये लेने से इंकार कर दिया।

उसकी देशभक्ति ने सभी को मुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के पश्चात दादी ने 'जगिया' को खाना देने के लिए बुलाया, वह बाहर चौखट पर, विशेष-रूप से रखे गये अपने बर्तन को लेकर खड़ा हो गया, दादी ने अंदर से लगभग फेंकते हुए उसे खाना दिया और वह प्रसन्न-मन से खाना लेकर चला गया। रीमा को विद्यालय में मैम की कही बातें स्मरण हो आयी। छुआछूत असंवैधानिक करार दी गई है, यह एक अक्षम्य अपराध है। रीमा के बाल-मस्तिष्क में सब गड्डमड्ड हो गया। परिवार में सबकी आदरणीय, 'दादी' और विद्यालय में प्रसिद्ध, 'मैम' में कौन गलत है?

गणतंत्र की जलेबी

अनू सरकारी स्कूल में शिक्षिका है, अक्सर सरकारी स्कूल में कमजोर आर्थिक स्थिति वाले माँ - बाप के बच्चे पढ़ने आते हैं, जिनका उद्देश्य पढ़ाई-लिखाई से ज्यादा सरकारी सुविधाओं का लाभ उठाना होता है। मसलन, पुस्तक, स्कूल यूनिफॉर्म के नाम पर मिलने वाले रुपये, साइकिल आदि प्राप्त करना, कभी-कभी अनू की नैतिकता विद्रोह कर देती है और वह दिल से बच्चों को पढ़ाने का प्रयास करने लगती है। कल छब्बीस जनवरी है, तो अनू का हृदय भी देशभक्ति में डूब गया और वह बच्चों को भारतीय गणतंत्र-दिवस एवं संविधान के बारे में कुछ पढ़ाने को उद्धत हो गई। कक्षा में जब वह गणतंत्र के बारे बता रही थी, तो बच्चों ने कोई खास उत्साह नहीं दिखाया। विषय को रोचक बनाने के लिए उसने कक्षा में पूछा-

“बच्चों, छब्बीस जनवरी जानते हो”?

समवेत स्वर में बच्चों ने कहा- हाँ!

“उस दिन क्या होता है”

“उस दिन हमें स्कूल में जलेबी मिलती है” पूरे जोश में बच्चों ने जवाब दिया।

चुनावी-सहयोग

मिलनसार और थोड़े खुले-स्वभाव के कारण ललमतिया- धोबन का गाँव के हर घर में जाना होता था और गाँव के स्त्रियों, युवा-वृद्ध, सबके मध्य वह खासी लोकप्रिय भी थी। गाँव के सुरक्षित-क्षेत्र घोषित किये जाने से, विपक्ष ने ललमतिया को चुनाव लड़ाने की पूरी तैयारी कर ली।

इससे युवा होरिया विक्षुब्ध था। गाँव के हर छोटी-बड़ी समस्या के प्रति सजग रहनेवाला होरिया, गाँव वालो के सहयोग से विद्यालय, स्वास्थ्य, सफाई, कुआँ -तालाब आदि को लेकर वर्तमान जमींदार-मुखिया पर सफल दवाब बनाये रखता था। सुरक्षित-क्षेत्र घोषित होने से उसे पूरी उम्मीद थी, कि वह विपक्ष का प्रत्याशी बन चुनाव लड़ेगा भी और जीतेगा भी।

पर, ललमतिया के आ जाने से सारा चुनावी-समीकरण गड़बड़ा गया था। होरिया का क्रोध, सातवें आसमान पर था। इधर सत्ता हाथ से खिसकती देख, वर्तमान ज़मीदार -मुखिया के हाथों, मानों तोते उड़ गए, उनकी नींद गायब थी। आखिर, एक रास्ता निकल ही आया, रात के तीसरे पहर, चौखट पर खड़े ज़मीदार- मुखिया के हाथ से काले बैग लेते हुए, होरिया ने गर्मजोशी से उन्हें सहयोग का आश्वासन दिया। अगले दिन पर्चा दाखिल करने गई, ललमतिया ने आश्चर्य से होरिया के बाजू में खड़े, मुस्कुराते हुए ज़मींदार-मुखिया को देखा। आज फिर, चुनावी-सहयोग के नाम पर एक जुझारू नेता बीक गया था।

केक

कल परी का जन्मदिन है, हर साल की तरह इस बार भी बड़ा जलसा होगा, कई तरह के लजीज व्यंजन के साथ, 'केक' भी कटेगा। आरती के मुँह में केक के नाम से अभी से पानी आने लगा। उसकी खुशी छुपाये नहीं छुप रही थी, आखिर, वह कोठी पर होने वाले इस जलसे की साल भर प्रतीक्षा करती है। अम्मां के साथ उस दिन वह भी कोठी पर अम्मां का हाथ बटाने जाती है और स्वादिष्ट भोजन एवं केक का मजा लेती है। अपने में मगन आरती की नजर तभी अम्मां पर पड़ी, का हुआ अम्मां? इतनी जल्दी काम से आ गई? मालकिन की सोने की अंगूठी खो गई थी, तो मुझे 'चोर' मान, काम से हटा दिया आरती हतप्रभ रह गई!

कल स्कूल तो नहीं जाऊँगी, सबको जलसे के बारे में बता रखा था, अब ये चोरी वाली बात से तो और बदनामी हो गई, लड़कियाँ ताने देंगी। उसे मालकिन पर भी गुस्सा आ रहा था, इतने साल, इतने कार्य-प्रयोजन हुए, व्रत-त्योहार हुए, उन्हें अम्मां पर जरा भी विश्वास नहीं, मन टूट-सा गया। दु:ख एवं अपमान से भूख मर गई। पूरे घर में मातम छा गया, किसी का मन खाने का नहीं हुआ। किसी तरह रात कटी।

सुबह दरवाजे पर मालकिन, खड़ी थी। मालती की चिरौरी करती बोली, मुझे माफ़ कर दे मालती, मैंने तुम्हें गलत समझा। अंगूठी आटा निकालते समय कनस्तर में गिर गई थी, चल काम पर चल, तेरे बगैर परी का जन्मदिन कभी हुआ है क्या? जी, आती हूँ, आरती, चल बिटिया, तुझे केक खाना है न! अम्मां मैं न जाऊँगी, अब मुझे 'केक' अच्छे नहीं लगते, लौटती हुई मालकिन के कानों ने भी आरती का जवाब सुना और उनके कदम लड़खड़ा गये।

मंगलसूत्र

विजय के भरोसे घर भी चलना मुश्किल है, अपनी सारी कमाई तो वह पी जाता है। कितना समझाया उसे, लेकिन उसके कान में जूं नहीं रेंगी। उसीका नतीजा है, कि वह आज अस्पताल में है। जहरीली दारू पीने की वजह से उसके चार साथी भी अस्पताल में मौत से जंग लड़ रहे हैं। एक बार

तो जी चाहा कि, उसे उसके हाल पर छोड़ दें। कौन सा सुख विजय ने दिया है? दारू पीकर दिन-रात मारपीट करने के सिवा करता ही क्या है? घर में जो भी जमा-पूंजी थी, सब उसके इलाज में दे चुकी है और पैसे की जरुरत है, रफ्फू, फॉल-पीको, थोड़ा बहुत कपड़ों की मरम्मत आदि का काम, कभी किसी के घर खाना बनाने का काम, आदि करके वह घर चलाती है।

बेटा छठी के बाद पढ़ाई छोड़कर कपड़े की दूकान में काम करता है। गहने के नाम पर घर में मात्र उसका टूटा मंगलसूत्र है। अभी हाल ही में अपने और बेटे की कमाई से बचत करके मंगलसूत्र को ठीक करवाया था, करवाचौथ पर पहनने के लिए, लीला हाथो में मंगलसूत्र पकड़े, उसे निहारती रही। विजय का कातर चेहरा आँखों में आ गया। मानो क्षमा मांग रहा हो, इस बार बचा लो, क्या करूं? उसपर कैसे विश्वास करूं ? कहाँ से पैसे लाऊँ ? जो होना है, होने दो। लीला की आँखें छलछला आईं, वह एक झटके से उठी, दवाई की पर्ची निकाली और मुट्ठी में मंगलसूत्र जकड़े, तेजी से सुनार के दुकान की तरफ दौड़ पड़ी।

आनंद

सुंदर हॉर्न मारे जा रहा था, रेशमा जल्दी से पांव में सैंडिल डाले आकर उसके स्कूटी पर बैठ गई, जरा सब्र रख, दुपट्टे से चेहरे को ठीक से ढंक भी नहीं पाई थी, कि माथे पर सवार हो गए, वो तो अच्छा हुआ कि, वार्डन का ध्यान हार्न की आवाज पर नहीं गया, सुंदर ने एक उचटती नजर रेशमा पर डाला और इको-पार्क की ओर स्कूटी मोड़ दिया, एक तो छुट्टी का दिन, तिस पर जाड़े की गुनगुनी धूप, पार्क में काफी भीड़ थी, बड़ी मुश्किल से इस जोड़े को पार्क के पिछवाड़े, एक झुरमुट, में एकांत मिला।

रेशमा के रेशम-गात का हल्का-सा स्पर्श भी सुंदर को मदहोश करने के लिए काफी था, रेशमा भी उसके संस्पर्श से होने वाले सिहरन से रोमांचित होती थी। एक-दूसरे में खोये घंटा भर हो चला था, कि सुंदर कुछ खाने के लिए लाने पार्क में बने फूड-काउंटर पर गया। तभी, रेशमा का मोबाइल बज उठा अरे, अंशुल का फोन मिश्री घुली आवाज में रेशमा उससे बातें करने लगी और मन ही मन सोच रही थी, विदेश में रहने वाले अंशुल से सिंपल ग्रैजुएशन करने वाले सुंदर की क्या तुलना? शादी की तारीख तय होते ही सुंदर को सब बता दूंगी, तबतक, उसके सान्निध्य का आनंद लेने में क्या हर्ज है? उधर रेशमा के ख्यालों में खोया सुंदर, काउंटर पर भीड़ में अपनी बारी का इंतजार कर रहा था।

वेलेंटाइन

पिंकी को प्यार से बड़ा डर लगता है, पता नहीं किससे प्यार हो जाए? सुनती है कि, प्यार अंधा होता है, बिना सोचे-समझे किसी से भी हो जाता है, फिर ऐसी दीवानगी होती है, कि उसके बिना सारा संसार बेकार लगता है, अगर घर-परिवार के लोग कुछ ऊंच-नीच समझाने की कोशिश करते हैं, तो वे ही सबसे बड़े दुश्मन लगने लगते हैं। प्यार रूप-रंग, अमीर-गरीब, जात-पात, धर्म आदि कुछ भी नहीं मानता है। यदि प्यार असफल हो गया तो लोग जान तक दे देते हैं, न बाबा न मुझे ये प्यार-व्यार के चक्कर में नहीं पड़ना है। बस, यही सब सोचकर पिंकी केवल अपनी किताबों से प्यार करना शुरू कर दी, स्कूल से कालेज आ गई, उसका एकमात्र किताबों से ही

इश्क रहा। अब जबकि छात्रावास की सभी लड़कियाँ वेलेंटाइन-डे की तैयारी में व्यस्त थी। तो पिंकी को अजीब-सा लग रहा था, कि वह क्या करें? बैठे-बैठे उसे एक आइडिया आया और वह अपनी किताब पर ही गुलाब उकेरने लगी। आखिर, किताब ही तो मेरा प्यार, मेरा 'वेलेंटाइन' है, पिंकी मुस्कुरा उठी, थोड़ी मेहनत के बाद एक खूबसूरत लाल-गुलाब किताब के पहले पृष्ठ पर मुस्कुरा उठा, पिंकी ने बड़े संजीदगी से लंबी सांस लेते हुए, बंद- आँखों से अपने गुलाब का स्पर्श किया, तो उसे लाइब्रेरी में वो खोई-खोई आँखों वाला, गंभीर-से लड़के के हाथ की छुअन याद आ गई, जब एक ही साथ एक ही किताब को लेने दोनों ने हाथ बढ़ाये थे। पूरे शरीर में एक झुरझुरी -सी हुई, इस सर्दी में भी पसीना आने लगा। पता नहीं क्यों, उसके गाल और आँख लाज से लाल हो गए, जबकि उस लड़के के बारे में उसे केवल यही पता है, कि वह तकरीबन रोज़ लाइब्रेरी में उसके बाजू वाले बेंच पर बैठता है।

स्टेट्स

बहुराष्ट्रीय कंपनी में बेटा-बहू के रहते इस उम्र में सिलाई का काम मांग रही हो? बच्चे रूपये नहीं भेजते? बल्कि, मैं तो कहती हूँ, कि यहाँ अकेली रहने से अच्छा है, कि तुम उन्हीं के पास मुंबई चली जाओ, कहते-कहते मैं रसोई से उसके लिए कुछ खाने को निकालने लगी भरे -मन से रंजू कह रही थी। मेरी मति मारी गई थी जो बेटे के पसंद की उस कम्पाउण्डर की मास्टरनी बिटिया को बहू नहीं बनाई, तब वह मुझे अपने अफसर-बेटे के 'स्टेट्स' की नहीं लगी थी।

आज अपनी अफसर- बहू के 'स्टेट्स' में मैं 'अनफिट' हो जाती हूँ भाभी और हाँ, उनके भेजे एक-एक रूपये का हिसाब देने से अच्छा है, कि मैं अपना खर्चा खुद उठाऊँ, अगर जी-तोड़ मेहनत एवं सिलाई करके मैंने बेटे को अफसर बना दिया तो, आज अपना खर्च भी चला लूंगी भाभी, ये लो मोबाइल नंबर, जरुरत होगी तो बुला लेना, मैं नाश्ता लेकर कमरे में आई तो वह कमरे से निकल गई थी। सामने मेज पर एक कागज की पर्ची में उसके नाम के साथ उसका मोबाइल नंबर लिखा था।

कन्या-पूजन

घर में श्रद्धा और भक्ति का माहौल अपने चरम पर था। पूजन-हवन के बाद कन्या-पूजन की तैयारी चल रही थी। 'मिली' कन्याओं के पांव धोकर विधिवत पूजन कर रही थी। उसकी कामवाली 'सरला' भी सुबह से घर की साफ-सफाई और अन्य काम में 'मिली' की मदद कर रही थी। पड़ोसी के नाते मैं भी उसकी मदद करने आ गयी थी। सब्जी, हलवा-खीर तैयार थे। अब बस गरमागरम पूरियाँ तलनी बाकी थी। मुझे और चार जगह जाना है। मेरा तो यह तीसरा घर है, देखो मुझे लाल रंग की ब्रेसलेट मिली, मेरा पर्स देखो, मेरा फेवरेट चॉकलेट, सारी कन्याएं बड़ी खुश थी। थोड़ी देर में श्रद्धापूर्वक भोजन जिमाया गया। सब जगह तकरीबन एक जैसा भोजन मिलने से कुछ बच्चियों ने खाना छुआ भर, पेट भरा होने से कुछ ने नहीं खाया। जिन लोगों ने नहीं खाया,उनका आना मिली ने 'पैक' कर दिया।

आंटी, हमें बाजू वाली बिल्डिंग में जाना है, प्लीज हमें छोड़ दो न, 'मिली' ने मेरी ओर देखा, उपवास एवं पूजन की थकान उसके चेहरे पर स्पष्ट दिख रहे थे। मैं बच्चियों को छोड़ने चली गई। लौटने पर अपनी बिल्डिंग की पार्किंग में 'सरला' की सात-साल की बेटी अपना दाहिना- हाथ, बांये- हाथ से पकड़े जोर-जोर से रो रही थी और बीच-बीच में अपनी पांच- साल की बहन को पांव से मार भी रही थी। 'छुटकी' पर उसका कोई असर नहीं हो रहा था। आंटी के घर से मिले दो पूरी और थोड़े से हलवे को पॉलीथिन से निकाल कर मजे से खा रही थी। भोजन का स्वाद और बड़ी-बहन से छीनने का विजयी-भाव, उसके मुखमंडल
को और भी स्निग्ध कर रहा था।

मातृत्व

मनचाही नौकरी, मनचाही शादी, छुट्टियों में देश-विदेश का भ्रमण सब-कुछ अच्छा चल रहा था। संगीता कभी इशारे में, कभी खुलकर, परिवार को बढ़ाने की बात कहती, लेकिन बेटी-दामाद बात हंसी में उड़ा देते, दो-दो एबार्सन के बाद अब अड़तीस की उम्र में 'माँ' बनने का सौभाग्य मिला भी तो,

भ्रूण का स्वाभाविक विकास नहीं हो पाने के कारण डाक्टर ने एबार्सन की सलाह दी है।

साथ ही, रक्तचाप बढ़े रहने के कारण, आगे कभी 'माँ' नहीं बनने की सख्त हिदायत भी, कितना समझाया था, कि समय पर सब-कुछ अच्छा लगता है, गर्भपात मत करवाओ।

बच्चे को आने दो, सब-कुछ तो है, तुम लोग के पास, घूमना-फिरना तो बच्चे के साथ भी हो सकता है। नहीं तो मेरे पास छोड़ देना बच्चे को, पर मत मारो, आने दो बच्चे को, किंतु मेरी एक न सुनी, संगीता को हठात् बेटी-दामाद का यह ऐश्वर्यपूर्ण आशियाना बियाबान लगने लगा।

सूझबूझ

नये जमाने के इस दंपति के सूझबूझ से संध्या फूली नहीं समा रही है। दसवीं पास उन्नीस- वर्षीया बहू और बारहवीं पास बाईस-वर्षीय बेटे ने उसकी दादी बनने की इच्छा को अगले पांच वर्ष के लिए स्थगित रखने को कहा, तो संध्या उनकी बेबाकीपन पर गुस्से से लाल हो गई, पर वह कर भी क्या सकती थी? आखिरकार, उसने चुप्पी साध ली।

उनलोग का जो जी चाहे, करें, कुछ इसी अंदाज में, खुद को घर के कामों में व्यस्त रखने लगी, कुछ दिनों के बाद बहू ने अपनी एकमात्र सोने की चेन, गिरवी रखकर, पति के मोबाइल-रिपेरिंग दुकान के एक कोने में ही, श्रृंगार का सामान बेचने का काम शुरू कर दिया, साथ ही, दोनों पति-पत्नी दूरस्थ एजुकेशन से आगे की पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे रहते, उनकी सूझबूझ और मेहनत का नतीजा है, कि दो साल पहले बेटे ने राज्य-सेवा आयोग की परीक्षा में प्रथम दस में जगह बनाई है, तो इस साल बहू ने महिला-वर्ग में तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

दान-सामग्री

सांझ ढलने वाली थी, माँ व्रत की पूर्णता के लिए दान-सामग्री और दक्षिणा, मंदिर में पंडित जी के लिए देते हुए, किशोर को सख्त हिदायत दी, कि ठंड बहुत ज्यादा है, इधर-उधर मत घूमना, जल्दी से घर आ जाना।

किशोर के घर से मंदिर जरा दूर है, पांव में तकलीफ रहने तथा उपवास आदि के कारण भी, जब माँ मंदिर नहीं जा पाती हैं, तो, सोलह-वर्षीय किशोर को ही मंदिर भेज दिया करती हैं।

किशोर जल्दी-जल्दी साइकिल के पैंडल मार रहा था, ताकि अंधेरा होने से पहले मंदिर पहुँच जाए, पर सर्दियों की रात तो घने कोहरे में लिपटी आधे रास्ते में ही मिल गई, कोहरे में धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए, किशोर को भूख से व्याकुल एक फटेहाल-वृद्ध भिखारी ठिठुरता हुआ मिला। व्यावहारिक-जीवन से अनजान, किशोर व्यथित हो गया और दान-सामग्री के लिए रखे स्वेटर निकाल उस वृद्ध-भिखारी को पहना दिया और पंडित जी के भोजन से उनकी भूख मिटा दी, वृद्ध ने उस नन्हें फ़रिश्ते को दिल से दुआऐं दी, गहन-आत्मसंतुष्टि से भरा किशोर घर लौट आया। इतनी भयानक सर्दी में बेटे को जल्दी घर पहुँचते देख, माँ ने भगवान का आभार व्यक्त किया। फिर पूछा दान-सामग्री दे आये? हाँ अच्छा हुआ माँ ने यह नहीं पूछा किसे?

प्रतिबंध

कल सुबह जाना है, निमकी- ठेकुआ, मठरी-लड्डू, बना-बनाकर, थकी- माँ गहरी नींद में सो रही है, पापा की पोस्टिंग छोटे शहर में होने से मेरी पढ़ाई के लिए माँ मेरे साथ यहीं रह गई। पापा छुट्टियों में ही आ पाते हैं। घर-बाहर की दोहरी जिम्मेदारी माँ पर है, दसवीं में आते- आते माँ का स्वभाव बहुत भिन्न हो गया। उसने एक अनुशासित-दिनचर्या में मुझे बांध दिया, मैं मस्तमौला-खिलंदड़ा, वीडियो-गेम, मोबाइल-गेम का शौकीन इस बंधन को छोड़ने की भरसक कोशिश करता। लेकिन, नाकाम रहा, बाजार भी जाती तो, एक बड़े पर्स में थोड़े रुपए और मोबाइल, रिमोट, वीडियो-गेम और घर की चाभी तक लेकर चली जाती।

ताकि मैं घर खुला छोड़ कर दोस्तों के साथ मस्ती करने न चला जाऊँ, अंतत: मजबूरन मैं पढ़ाई-लिखाई में फंस गया, लेकिन धीरे-धीरे मुझे पढ़ाई में मजा आने लगा और उसी का परिणाम है, कि आज देश के प्रतिष्ठित मेडिकल-संस्थान में मुझे दाखिला मिल गया। मेरी आँखें भर आई, अचानक माँ की नींद उचट गई और वह मुझे सीने से लगा कर फफक पड़ी, बेटा मुझे माफ़ कर दे, तुम्हारे प्रति मैंने बहुत कठोर बर्ताव किया, तुम पर बहुत प्रतिबंध

लगाये। नहीं माँ, प्रतिबंध नहीं, वह तुम्हारी प्रतिबद्धता थी माँ, जिसने मुझे मेरे मुकाम पर पहुँचाया है, माँ के दमकते चेहरे पर अप्रतिम विस्मय था।

धरना

शेरों और बाघों का अनुशासित शासन चारों ओर काफी लोकप्रिय होने लगा था, जंगल की हरियाली में बेतहाशा वृद्धि हो रही थी। जंगल जितने घने हो रहे थे, उतने ही शिकारी, जंगल आने से डरने लगे थे। वैसे जंगल की सीमा पर कुछ छिटपुट घटनाऐं हो भी जाती थी, किंतु पहले जैसी हिम्मत अब पड़ोसी- गीदड़ो में भी नहीं थी, आदतन गीदड़ भभकी देते भी थे, तो फिर जंगल के शेर उन्हें सूद सहित जवाब दिया करते थे। जो भी हो अब पहले की तुलना में जंगल में अमन-चैन काफी था, वनप्राणी भी आनंदित एवं उत्साहित रहते थे। यह सब देखकर जंगल के कुछ छोटे जानवरों के कलेजे पर सांप लोटने लगा, जंगल में चुनाव भी नजदीक था। ईर्ष्यालु जानवर इन लोकप्रिय शासकों से लोहा लेने के लिए एकजुट हो गए और भेड़िये को अपना नेता मान लिया।

भेड़िये ने संगठन का वर्चस्व दिखाने के लिए जंगल में रैली का आयोजन किया। तमाम तामझाम के बावजूद रैली सफल नहीं हो पाई तो, घबराहट में उन्होंने फिर एक योजना बनाई तथा शिकारियों को जंगल में नहीं आने का ठीकरा शेरों और बाघों पर फोड़ते हुए कहने लगी, कि इन लोगों की वजह से अब शिकारी जंगल नहीं आ रहे हैं। इससे तो आम-जानवर दुबककर रहना ही भूल जायेंगे, इसलिए जबतक शिकारियों के नियमित जंगल आने की व्यवस्था नहीं की जाती, हम सब धरने पर ही रहेंगे।

रैली

चुनावी माहौल में विभिन्न दलों का शक्ति -प्रदर्शन के लिए रोज रैलियाँ होती रहती है, आज भी थी, दुकान बंद रखना पड़ा। भीड़ कब हुड़दंग मचाने लगे और दुकान में नुकसान कर दे, इसलिए, रैली के दौरान सभी मार्केट बंद ही रहते हैं, टी.वी पर रैली खत्म होने की खबर आई, तब मैं भी कुछ बिक्री की आस में दुकान खोलने निकल पड़ा। चौराहे पर एक अधेड़ ग्रामीण संभवत:

रास्ता भटक गया था। हैरान-परेशान मेरे पास आ गया। बाबू, पांच बज गइल का? गाँव जाइ के बस निकल जाइ, तनिक मदद कर दो हाँ, कहाँ जाना है? अरे, रैलियाँ वाला दफ्तर पर गाड़ी होइ, सब कहत रहल कि, पटना घुमा देम, अउर इहा पैदले कहाँ गाँधी मैदान ले जाय लागल, बीमारी के सरीर बा, इतना चले के हिम्मत नइखे, ओही से खिसक गइनी अउर रास्ता भटक गइनी। ये बाबू तनिक पहुँचा दो मेरी दुकान के तरफ ही रैलीवाले दल का कार्यालय था, मैंने उसे बाइक पर बिठा लिया। बाइक से उतरते ही एक परेशान-सा नौजवान उसके पास आया। उसे देखते ही अधेड़ बिफर गया। यही पटना घुमाया और रुपया दिया जी? अब अगला हफ्ता वाला रैली में ना आवेंगे और न ही मेहरारु(पत्नी) को लायेंगे, न चाही धोती-साड़ी, रूपया-पैसा!! मत आइएगा चचा, पर हल्ला मत करिए, लगभग डपटते हुए युवक ने कहा! बुढ़ऊ के बात से कहीं दूसरे न बिदक जाये। आखिर, नई-नवेली पत्नी को पायल दिलाने का वादा किया है। अबकी वाली दल, रैली में अधिक धन खर्च करने वाली है। उसे इतनी ही भीड़ रैली में लाने के लिए, अबकी वाली पार्टी इस पार्टी से दुगने रुपये-पैसे भी देने वाली है।

डर

बीरेन ने अपनी पसंद से चंदा से विवाह किया था। पहले तो उसकी माँ इस विवाह के लिए तैयार नहीं थी, फिर बेटे की खुशी के लिए वह तैयार हो गयी। शहर के प्रतिष्ठित-धनाढ्य परिवारों में बीरेन का परिवार शुमार था। घर के सभी सदस्य सुंदर-सुशिक्षित थे। चंदा का परिवार, उसी के घर में किराए पर रहता था, साधारण शक्ल-सूरत की सुघड़-सांवली चंदा में बीरेन ने जाने क्या देखा, कि उसपर लट्टू हो गया। चंदा के माता-पिता भी इतना अच्छा घर-वर पाकर फूले नहीं समाए और दोनों का विवाह धूमधाम से हो गया।

ससुराल में सब कुछ ठीक-ठाक था, परंतु अपने रूप-रंग एवं कमजोर आर्थिक स्थिति वाले मायका होने के कारण, चंदा को यह डर घर कर गया था, कि आज नहीं तो कल, उसे उसके रूप-रंग एवं कमजोर आर्थिक स्थिति वाले मायका होने के कारण जरुर ताने दिये जायेगें। इसी ऊहापोह में बड़ी बेटी का जन्म हुआ। चंदा के आशा के विपरीत, बेटी का स्वागत बड़े खुले-दिल से परिवार ने किया। खैर, बेटी थी भी दादी एवं बुआ की जैसी सुंदर

माँ पर नहीं गई थी। चंदा को बहुत सुकून मिला, लेकिन, आजकल चंदा भीतर- ही- भीतर बहुत ज्यादा भयभीत हैं, दूसरी संतान आने वाली है।

अगर इस बार भी बिटिया आई तो? उसने बीरेन से कई बार भ्रूण-जांच की बात करनी चाही, पर वह कुछ समझते ही कहाँ है? आखिर, जिसका डर था, वही हुआ, फिर बिटिया ही हुई, चंदा की जेरॉक्स-कॉपी चंदा का दिल बैठ गया। अब तो इस घर में मेरा तिरस्कार तय है। भगवान, ये क्या हो गया? थोड़ी देर के बाद सासू- माँ गोद में नन्हीं- जान लिये आईं और बड़े भींगे स्वर में बोली तूने हमारा घर लक्ष्मी-सरस्वती से भर दिया है बहू, हमलोग तुमसे कभी उऋण नहीं हो पायेंगे। सात-साल से जकड़ा 'डर' आज का फूर हो गया और चंदा सास के गले लग, खुशी के मारे रो पड़ी।

रोशनी

संजू का बापू तीन बरस पहले मुंबई कमाने गया था, सालभर तो सब ठीक-ठाक रहा, खोज-खबर लेता रहा, बीच-बीच में रुपये-पैसे भी भेजा। एक बार पंद्रह दिन के लिए आया भी, किंतु करीब डेढ़- साल से कोई खोज- खबर नहीं है, उड़ती-उड़ती खबर आई कि, दूसरी औरत कर लिया है, आखिर, गौरी कितने दिन रोना-धोना करती? दोनों बच्चों का मुँह देख, हिम्मत की और घर के साथ-साथ, कभी-कभार सब्जी बेचने का काम, अब पूर्णकालिक- तौर से करने लगी, मन ही मन सोच रखा था, कि अगले साल से छुटकी को भी भाई के साथ सरकारी-स्कूल भेजेगी, अपनी तरह अनपढ़ नहीं रहने देगी।

इधर तबियत काफी ढीली रहती है, डाक्टर ने आराम करने और पौष्टिक भोजन लेने कहा है, ताकत की गोलियाँ भी दी है, मजबूरन, संजू को साथ में सब्जी बेचने बिठाने लगी। सब्जी ले-लो सब्जी, ताज़ी-ताज़ी सब्जी, बच्चे की मीठी बोली पर, ग्राहक खींचे चले आते, बिक्री तो अच्छी होने लगी परंतु, स्कूल छूटता चला गया।

एक स्वयंसेवी-संस्था ने मुहल्ले में बच्चों के लिए कुछ प्रतियोगिताऐं आयोजित की है, आज संजू का काम पर जाने का बिल्कुल मन नहीं है, वह भी कार्यक्रम देखने चला गया। शाम होने वाली थी, हाथ में उपहार लिए संजू दौड़ते हुए आकर माँ से लिपट गया। ये भारत-माता का चित्र बनाने के लिए और यह, बिना लिखे जल्दी से मन ही मन जोड़ने के लिए मुझे पुरस्कार मिला

है माँ, वे लोग मुझसे मेरे स्कूल का नाम पूछ रहे थे, मैं चूप रहा माँ अक्सर सब्जी बेचते समय, वह जमीन पर तिनके से चित्र उकेरा करता था और उसके हिसाब- किताब के तो मंडी में सभी लोग कायल थे, गौरी की आँखें भर आईं सीने से बेटे को चिपकाए वह दृढ़- स्वर में बोली, अब तुम्हें चूप नहीं रहना पड़ेगा बेटा, कल से तू स्कूल जरुर जायेगा, मां हम बी सकुल जायेंगे हाँ, छुटकी तू भी जायेगी, संजू ने बहन का हाथ पकड़ कर कहा तो,गौरी भी मुस्कुरा पड़ी अंधेरा छंटने लगा, चारों ओर रोशनी झिलमिलाने लगी।

बेहूदा

बुआजी की नजर में वे, उनका परिवार और उनके विचार, दुनिया में सबसे अच्छे हैं, अगर उनसे अच्छी कोई चीज, उन्हें महसूस हो गई तो, वह एकदम बेकार है, या कोई बहुत अच्छा इंसान मिल गया तो, उनके लिए वह 'बेहूदा' है, पहले-पहले घर में बेटे की शादी है, तो उन्होंने सालभर पहले परिणय-सूत्र में बंधे भांजे 'शुभम्' एवं बहू 'रिया' को भी बड़े मनुहार से बुलाया। सुंदर-प्यारी रिया बहुत ललक के साथ समारोह में आई। अभी बुआजी के पांव छू ही रही थी, कि उनकी हिकारत भरी आवाज आई, लो आ गई, बलकटी, अंगरेजन, भूतनी कहीं की।

कुछ इस ढंग से बोली कि रिया के साथ, कुछ ही लोग सुन पायें, यहाँ तक कि शुभम् भी नहीं सुन पाया, रिया का मन खट्टा हो गया। विदाई के बाद जब बहू आई तो, पक्के रंग की मरियल- सी बहू को देख सबको कल रिया के साथ बुआजी के व्यवहार का कारण समझ में आ गया। बदजुबानी के कारण, धीरे-धीरे बुआजी से सभी नाते-रिश्तेदार दूर होते चले गए। इधर, सुनने में आया है, कि अब बुआजी किसी से कुछ नहीं कहती, बस हाल-चाल पूछ लेती हैं, शायद बुढ़ापे में उन्हें अपनी गलती का एहसास हो रहा है।

राजीव ने 'नेट' पर बेटी सुमि का रिश्ता ढूंढा है, सब-कुछ मन-माफिक है फिर भी, वर-पक्ष के किसी नजदीकी से पूछताछ कर आश्वस्त होकर ही वे शादी फाइनल करने के पक्ष में थे। बातचीत से पता चला कि, लड़केवाले बुआ जी के ससुराल-पक्ष के रिश्ते में है। कुछ सोच-विचार कर राजीव बुआजी से मिलने पहुँचे, दुआ-सलाम के बाद, राजीव ने लड़के के परिवार की चर्चा छेड़ दी बुआजी के ससुराल का मामला था, तो बुआ जी ने

उनके तारीफों के पुल बांध दिये, अचानक राजीव ने मोबाइल पर लड़के की तस्वीर दिखाते हुए, सुमि के विवाह की बात बताई और पूछा, लड़का कैसा है? इतना अच्छा घर-वर, सुमि को? बुआजी को तो मानों काठ मार गया। क्षणभर बाद संभलकर बोली "अरे, परिवार तो ठीक ही है, परंतु ये लड़का एक नंबर का 'बेहूदा' है।

सच कुछ लोग कभी नहीं बदलते हैं, शायद बुआजी भी उन्हीं में एक है। राजीव मुस्कुरा उठें और सुमि की शादी वही फाइनल कर दी।

अमर-शहीद

चार वर्षीय राहुल आजकल, मम्मी के कारण बहुत असमंजस में है। हमेशा हंसती- मुस्कुराती रहने वाली उसकी मम्मी, पापा के भगवान के घर जाने के बाद से, अजीब सी रहने लगी है, सफेद जैसे अजीबोगरीब रंग के कपड़े पहनती है, पहले माँ की गोद में बैठ कर राहुल उनकी रंग-बिरंगी चूड़ियों से खेलता रहता था, चूड़ियों की खनखनाती आवाज उसे बहुत पसंद थी। मम्मी की बड़ी लाल-बिंदी, कभी उनकी नाक पर, कभी अपनी नाक पर चिपकाकर, जोकर बनाता, दोनों माँ-बेटे खूब मस्ती करते थे। कितने दिन हो गये, मम्मी ने उसकी पसंद की 'खीर' भी नहीं बनाई है और न चिड़ियाँ दिखा-दिखाकर, उसे बादाम वाला दूध पिलाती है, अब तो खुद ही मम्मी के गोद में जाकर बैठना पड़ता है, मम्मी तो, आजकल लाड़ भी नहीं जताती है। एक दिन उसने माँ से चिल्लाकर शिकायत भी की थी, पर वह चूप ही रही, .अंतत: उसने कहा भी, कि मम्मी मुझे कुछ मत दो, किंतु, अच्छे कपड़े और चूड़ी - बिंदी तो लगाकर रहा करो, सूने में ताकती माँ ने भर्राये-स्वर में कहा, जिन बच्चों के पापा मर जाते हैं, उनकी माँयें ऐसे ही रहा करती हैं। राहुल अवाक् रह गया। अच्छा पापा भगवान के घर नहीं गयें हैं, वे मर गये है! जरूर कुछ गड़बड़ है, राहुल दादाजी से पूछेगा, मम्मी को कुछ अता-पता नहीं होता।

आखिर, आज राहुल ने दादाजी से पूछ ही लिया, कि पापा कैसे मर गये? छलछलाती आँखों से दादाजी ने उसे कहा! तुम्हारे पापा मर नहीं सकते बेटा, वह तो अमर-शहीद है, उन्होनें देश के लिए अपना बलिदान किया है। राहुल की आँखें चमक उठी, मुझे पता था, मम्मी कुछ नहीं जानती।

मम्मी, पापा मरे नहीं हैं, चिल्लाता हुआ राहुल मम्मी के कमरे की तरफ भागा, दादा जी के समझ में कुछ नहीं आया और वे भी राहुल के पीछे-पीछे अंदर की तरफ गये। राहुल अपने खिलौनों की पिटारी से आठ-दस रंग-बिरंगी चूड़ियाँ निकाल कर माँ को दे रहा था, माँ उसे सीने से चिपकाकर,रोने लगी। तभी, राहुल एक बड़ी सी लाल बिंदी माँ के माथे पर लगाते कहने लगा!

मम्मी, दादा जी को सब पता है, उन्होंने बताया है, कि मेरे पापा मरे नहीं हैं, उन्होंने तो देश के लिए केवल अपना बलिदान किया है। बस! ये चूड़ी, ये बिंदी, तुम सब-कुछ पहन सकती हो, रोती बहू के शीश पर हाथ रखते हुए, दादाजी कांपती आवाज़ में कह रहे थे। हाँ बहू, राहुल जैसा चाहे, वैसे ही रहा करो, शहीद मरते नहीं हैं। उनकी विधवाएं नहीं होती, अमर शहीदों की केवल पत्नियाँ होती हैं, तेज बसंती हवा ने कमरे की बंद पड़ी खिड़कियाँ खोल दी, तेज झोंके से अमर शहीद के तस्वीर पर चढ़े गुलाब, उनकी पत्नी के सिर पर

गिर पड़े, मम्मी के माथे पर बिंदी लगाकर, ताली बजाते राहुल की खुशी को देख, महीनों बाद उदास, मम्मी और टूटे- दादाजी के चेहरे पर फीकी- सी मुस्कान आ गई।

सरस्वती-पूजा

बसंत-पंचमी की सुगबुगाहट हवा देने लगी थी, मूर्तिकार छोटी-बड़ी मूर्तियों को अंतिम -रूप देने में लगे थे, रेलवे लाइन पर रहने वाले बच्चे भी पूजा को लेकर अति-उत्साहित थे, अबे सरसती-पूजा में बारह दिन ही बचा है, का किया जाय? चंदा-वंदा भी तो मांगना पड़ेगा, हन्ना हाँ इ बार डीजे बढ़िया मंगायेंगें, अरे रुपया जितना होगा, उतने में न करेंगे, परसाल तो, पहलेजा से रजुआ का मोसवा, जो बिजली मिस्त्री है, किसी का डीजे बनाने लाया था, तो टेस्ट करने के लिए हम लोग को भेज दिया था, भों, भों, भों करके साला डैंस का मजा खराब कर दिया, गोलूवा को नया आइडिया आया, अरे! अबरी ओकरे मोसवा से भाड़ा पर डीजे लेंगें, तब तो बढ़िया देगा और,इ बार तो एक-एक पउवा लेके मस्त डैंस करेंगे, सब लोग को गोलूआ का आइडिया पसंद आ गया, अब पूजा-सामग्री और प्रसाद के खर्च की बात आई, हाँ पास में ही सरकारी अफसरों के मुहल्ला में पाँच ठो दस तल्लवा बिल्डिंग और बड़ी-बड़ी कोठियों से इक्कीस रूपये भी चंदा मिलेगा तो, केतना होगा? ये गोलूआ, जोड़ तो जरा, गोलूआ सोचते हुए सिर खुजलाने लगा, इतने पैसे का हिसाब जोड़ना कोई मामूली बात थोड़ी न है, बड़े विचार-विमर्श के बाद रजुआ बोला, अबे बड़ी रूपया हो जायेगा, पर मूर्ति भी तो देखना पड़ेगा, अरे! हाँ, असल बात तो हुई ही नहीं, सब मिलकर मूर्ति वाले के पास गये। जब दाम पूछा तो, सिट्टी-पिट्टी गुम! इतना छोटा-मूर्ति का बीस हजार!! पगलाये गये हो? काम के टेम में दिमाग मत चाट, चल भाग यहाँ से मूर्तिकार की घुड़की पर सभी किशोर भाग गये। पुन: चंदा जोड़ा जाने लगा और तय हुआ कि, आर्डर देकर पंद्रह हजार की मूर्ति लेंगें और इक्यावन से कम चंदा किसी से नहीं लेना है, ताबड़तोड़ तैयारी होने लगी, रसीद-बुक छपाकर, बिल्डिंग के चौकीदारों को थोड़ा चाय-खैनी खिलाकर चंदा मांगने निकल पड़े, आठ-दस जगह थोड़ी मशक्कत करते पाँच-सौ के करीब चंदा जमा भी हो गया, परंतु ये चार तल्लावाली मेमसाब रसीद पर अपने से नाम नहीं लिखकर, इन्हीं लोगों को नाम एंव रकम लिखने को कहा। रकम तो गोलूआ लिख लिया, किंतु, सबका नाम लिखना तो बड़ी मुश्किल काम है, परिणाम स्वरुप बिना चँदा लिए, वहाँ से खिसक लिये, लेकिन, इसके बाद, बहुत लोगों ने नाम नहीं लिख पाने के कारण, चंदा ही

नहीं दिया, मूर्ति का दाम चुकाने के बाद, सिर्फ, छह-हजार रूपये ही बचें, जिसमें पूजा-सामग्री, प्रसाद, पंडित जी का दक्षिणा और विसर्जन के लिए भाड़े का रिक्शे ही हो सकता था, डीजे, डैंस और पउवा तो सोचना भी मुश्किल था। निराश लड़कों ने एक-दूसरे को उदास नजरों से देखा विसर्जन के दो दिन बाद लोगों ने रजुआ, गोलूवा और उनके दोस्तों को सरकारी स्कूल-ड्रेस में स्कूल जाते देखा हाँ, अगले साल उन लोगों को धूमधाम से सरस्वती-पूजा जो करनी थी।

सिगनल

आज गाँधी-जयंती है। अंशुल के विद्यालय में भी गाँधी- जयंती सह स्वच्छता-पखवाड़ा मनाया जा रहा था। अमन बाहर गए हुए हैं, इसलिए श्रद्धा अकेले ही सुबह गाड़ी से अंशुल को लेकर विद्यालय आई थी। जल्दी में कुछ नाश्ता बना नहीं पाई थी, तो कुछ चॉकलेट,चिप्स कप-केक वगैरह गाड़ी में रख लिया था। प्रोग्राम बहुत ही अच्छा रहा, गाँधी जी की तस्वीर बनाने एंव स्वच्छता-अभियान के टैग-लाइन के लिए अंशुल को क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय-पुरस्कार मिले। गाड़ी चलाते हुए श्रद्धा ने बड़े लाड़ और गर्व से बेटे को देखा। सभी शिक्षक इसकी प्रतिभा की प्रशंसा कर रहे थे। इन सबसे बेखबर अंशुल चिप्स खाने में व्यस्त था।

नई पीढ़ी कितनी प्रतिभावान हैं,अवसर मिले तो ये क्या कुछ नहीं कर सकती हैं?अनपढ़ एवं गरीब परिवार के बच्चों को भी देखो,क्या खूब स्मार्ट-फोन चलाते हैं! अगर हम जैसे लोग बिना किसी भेदभाव के इनकी सहायता करें तो अपने देश और समाज में क्रांति आ जाएगी। प्रसन्न श्रद्धा अपने-आप से यूँ ही बतरस करती कब सिग्नल पर पहुँच गयी,पता ही नहीं चला।रेड-सिग्नल देख, उसकी तंद्रा टूटी।

अंशुल चिप्स, चॉकलेट्स एंव कप-केक खा चुका था और उनके रैपर्स पकड़े उसका मुंह ताक रहा था।ओफ्फ हो!सीट गंदी कर दी, झुंझलाते हुए, श्रद्धा ने कार का शीशा नीचे कर सारे रैपर्स बाहर फेंक दिए। तभी, सिग्नल पर बैलून बेचने वाले बच्चों में से कोई एक बच्चा तेजी से दौड़ता आया और सारे रैपर्स बटोरकर, उसके सामने हाथ फैला दिया। "क्यूँ पैसे चाहिए? आज तो बैलून भी नहीं बेच रहे हों।"

“आज गाँधी जयंती है न ! आज हम सभी ने योजना बनाई है, कि आज बैलून की जगह सिग्नल पर फेंके गए कागज, पोलीथीन आदि चुनेंगे और आपलोग जो भी पैसे देंगे, उससे साबुन खरीदकर, अच्छे से नहायेंगे, अपने कपड़े साफ करेंगे। फिर, गाँधी जी के तस्वीर को माला पहनाकर” बात पूरी होती कि, सिग्नल हरी हो चुकी थी और गाड़ी आगे बढ़ गयी थी।

चुनौती

विद्यालय के वार्षिकोत्सव -समारोह का दीप जलाकर शुभारंभ कर, सुमिता अपनी कुर्सी पर बैठ गई। बच्चों के मोहक कार्यक्रम प्रारंभ हो गये। सुमि मेरी दवाईयाँ लीजीए बड़ी अम्मां, सुमि मेरे कपड़े स्त्री हुये? अभी लाई चाचाजी, बच्चों की टिफिन? रख दी चाची, महरी दो दिन की छुट्टी पर है, सुमि जरा संभाल ले, अनाथ सुमि पौ -फटने से देर रात तक सबका काम करती। पुश्तैनी- घर में चार भाईयों का परिवार रहता था, सबकी रसोई अलग-अलग थी।

सुमि के पैदा होते ही माँ चल बसी, पिता की दूसरी गृहस्थी जबतक बसती, सड़क दुर्घटना में वे भी चल बसे, दादी के जिंदा रहने तक तो, सुमि को कभी कुछ कमी का एहसास नहीं हुआ। किंतु, उनके जाने के बाद, घर के लोगों को एक मुफ्त की नौकरानी मिल गई। दादी के जिंदगी में वह सरकारी स्कूल से आठवीं पास कर चुकी थी। साथ ही, समय निकाल कर वह कमजोर तबके के बच्चों को सस्ते में ट्यूशन पढ़ाती थी। दादी के जाने के बाद स्कूल जाना बंद हो गया। लेकिन दादी की एक बात उसे हमेशा याद आती थी।

सुमि तू पढ़-लिख कर क्या अपने पैरों पर खड़ी हो पायेगी? सुनकर उसे बड़ा गुस्सा आता था। एक दिन मैं इन्हें अपने पाँव पर खड़ी होकर जरुर दिखा दूंगी, अब समझ में आता है, कि दादी क्यों ऐसा कहती थी। उसने प्राइवेट से मैट्रिक की परीक्षा पास की अपने ट्यूशन के रूपयों से पुरानी -पुस्तकें आधे दाम में खरीद -खरीदकर, उसने पत्राचार द्वारा इंदिरा गाँधी खुला विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई की, सुमि के मेहनत एवं लगन से प्रभावित होकर एक शिक्षक-परिवार ने अपने पुत्र से उसके विवाह का प्रस्ताव रखा। बिना दान-दहेज के, विवाह के लिए लड़का मिल रहा है, तो भला चाचाओं को क्या आपत्ति होती? झटपट विवाह हो गया। पति किसी छोटे-मोटे निजी कंपनी में काम करता था। बस, गुजारा हो जाता था।

सुमि ने यहाँ भी ट्यूशन का काम शुरू कर दिया। साथ ही बी.एड.मे दाखिला ले लिया। दो बच्चों से शुरू हुआ,ट्यूशन ऐसा चला कि, वह पांच-पांच बच्चों का तीन-तीन बैच चलाने लगी, सुमि के पढ़ाये बच्चों के परीक्षा परिणाम इतने अच्छे होते थे, कि चार साल के बाद, उसने पांचवीं कक्षा तक का अपना विद्यालय खोल लिया। विद्यालय के पंजीकरण, एवं अन्य दौड़-भाग का काम पति करने लगे।

रिटायर्ड ससुर का अनुभव भी विद्यालय को स्थापित करने में बहुत काम आया। आज दस वर्षों में वह अपने जीवन एवं अपने परिवार को नये मुकाम पर ले आई है, जिस मायके ने उसे एक नौकरानी से ज्यादा कुछ नहीं

समझा, आज वे उसपर गर्व करते हैं, जिंदगी की विषम परिस्थितियों में दादी की 'अपने पांव पर खड़े होने की' चुनौती ही थी, कि आज वह एक कामयाब महिला के तौर पर वह समाज में जानी जाती है। मैम, कृपया मंच पर आयें और बच्चों से दो शब्द कहें, सुमि सधे कदमों से मंच की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी।

बदला

प्रत्येक प्रवासी दिहाड़ी-मजदूर की तरह, हरिया भी साल में एक बार दशहरे से लेकर कार्तिक- पूर्णिमा तक, गाँव में रहता है, छठ-पूजा में गाँव आने की जुगत में अधिकारी से लेकर मजदूर, सभी लगे रहते है, इस बार भी आने वाले प्राय: सभी लोग गाँव आ ही गये है, छठ-घाट पर शाम के अर्घ्य की भीड़ में, जब हवेली वाले दिख गए तो, पिछले साल का दर्द लाजवंती के आँखों में उतर आया, पिछले बरसात में छह -महीने का पुत्र सर्पदंश से खो चुकी, लाजवंती, हरिया के 'दिल्ली' कमाने लौट जाने से, बिल्कुल अकेली हो गई थी, जिस पर यह माहवारी शुरू हो गयी, अब तीन दिन बाद ही हवेली काम पर जाऊँगी, मालकिन ऐसे में काम नहीं करवाती है, 'बबुआ जी' तो कार्तिक-पूर्णिमा के हफ्ता दिन बाद, अपना जन्मदिन मनाकर ही जायेंगे, उनसे लाजो को बड़ा डर लगता है, बड़ी गन्दी नजर से देखा करते हैं।

सावन में प्यारी- सी बिटिया के होने की खबर पाकर हरिया फूला नहीं समाया, फ्राक, स्वेटर, टोपी, झूनझुना, गुड़िया जाने कितनी चीजें लेकर इस बार 'छठ-पूजा' में आया है। जब से आया है, बिटिया को गोद से एक पल नहीं उतरने देता है।

लाजो मुग्ध हो, बाप-बेटी को देखती रहती, अभी 'छठ का दौरा' (जिसमें पूजन के निमित्त प्रसाद एवं समस्त सामग्री रखी जाती है।) रखकर, फिर बिटिया को लाजो की गोद से ले लेगा, तभी हवेली का कमाऊ बबुआ पास आकर कुटिल-मुस्कान के साथ, बिटिया के गाल छूकर बोला बड़ी सुंदर बिटिया पैदा की है रे! लाजो तमतमाकर गई, हवेली का खून है, सुंदर तो होगी ही धीरे से हिकारत भरी आवाज में कहती लाजो हरिया की तरफ तेजी से बढ़ गई, बबुआ जी काठ हो गए, लाजो ने बदला ले लिया। दूर से मालकिन आश्चर्य से हरिया के गोद में खेल रही बच्ची की मुस्कुराहट को देख, सोच रही थी। बचपन में 'बबुआ' बिल्कुल ऐसे ही तो हंसता था!

भूख

मालती का आठवां महीना चल रहा है, आज चेहरा कुछ ज्यादा मुरझाया लग रहा है। इस अवस्था में कभी ठीक, कभी खराब लगता ही है, इसलिए जब उसने अभी शाम के पांच बजे ही डिनर बनाने की पेशकश की तो सुमि भी आलू के पांच पराठे और गोभी-मटर की सूखी सब्जी अभी ही बनवा लिए, बाद में माइक्रोवेब में गर्म लूंगी, नवीन का मैसेज है, आने में थोड़ी देर होगी और हाँ, बताना भूल गया था, शाम में मौर्या-होटल में पार्टी है, चलना है, आठ बजे तक रेडी रहना।

पार्टी पूरे शबाब पर थी, पुरुष सूट-बूट में और अधिकतर महिलाऐं लेटेस्ट फैशन में सजी-धजी आभिजात्य -संस्कृति का जलवा बिखेर रही थी, अभी तरह-तरह के स्नैक्स चल रहे थे। शाकाहारी और मांसाहारी, दोनों प्रकार के भोजन उपलब्ध हैं, वेटर मुस्तैदी से एक-एक मेहमान का ख्याल रख रहे थे। मेज पर स्नैक्स खत्म होते-होते वेटर कुछ और आइटम प्रस्तुत कर देते, कुल मिलाकर कह सकते हैं, कि मेहमानों का मुँह कभी खाली न रहे, इस बात की सफल कोशिश हो रही थी।

मेनकोर्स के लिए तो किसी के पेट में जगह ही नहीं थी, फिर भी, इस पंच-सितारा होटल का डिनर और तरह-तरह के स्वीट-डिश को खाने का लोभ संवरण करने की कोशिश बेकार थी, चाहते हुए भी सुमि अपने मनपसंद पुडिंग और बेक्ड रसगुल्ले के अलावा, अन्य स्वीट-डिश चख भी नहीं पाई। दो-ढाई घंटे के शानदार डिनर के बाद घर आकर जो सोये, तो सुबह दिन चढ़े ही नींद खुली।

सुमि ने रात के पराठे और सब्जी मालती को दे दिये, उसका मुरझाया चेहरा खिल उठा, “मेमसाहब, यहीं खा लूं? कल भारत-बंद और परसों रैली के चलते मेरा आदमी घर बैठ गया था, कुछ कमाई नहीं हुई, दो दिन से ठीक से खाना भी नहीं खायी हूँ”।

‘जा, खा ले’ सुमि की आँखें फटी रह गई, जब उसने मालती को पांचों आलू-पराठें और सारी सब्जी खाते देखा, बाप रे! इन छोटे लोगों की डाइट भी न! उफ़! फिर वह अपने लिए नींबू-पानी बनाने लगी, शायद डिनर थोड़ा 'हैवी' हो गया था।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - पूनम (कतरियार)
जन्मस्थान - 8 अगस्त, हजारीबाग(झारखण्ड)
शिक्षा - एम.ए., पत्रकारिता में डिप्लोमा, नेट, युजीसी.
संप्रति - लेखन
पता - ए-43, जगत- अमरावती अपार्टमेंट,
बेलीरोड़, पटना -1
ई मेल - poonamkatriar@yahoo.com
प्रकाशन - काव्य संग्रह- आगाह , शब्दनाद, संचरण
साझा संग्रह- विवेकानंद एक आदर्श, मातृभाषा.कॉम भाग 2,
स्त्री तू सृजक, माँ,
वूमन आवाज भाग 2- होली हुडदंग, रंग बरसे
सम्मान - वूमन आवाज सम्मान 2018, मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019,
अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2019

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-79-6
मूल्य 60/-